Turkish Online Journal of Qualitative Inquiry (TOJQI)
Volume 12, Issue 8, July 2021: 14347-14351

# पहाड़ी चित्रकला में रागमाला के चित्रों का कलात्मक अध्ययन

**प्रेमलता, पूनमरानी**

**डिपार्टमेंट ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्टस, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़**

Email: prem.lata@mangalayatan.edu.in

भारत के अन्य भागों की तरहकश्मीर, हिमाचल, पंजाब एवं उत्तराखण्ड के पहाड़ी क्षेत्रों में प्राचीन भारतीय चित्रकला का संशोधित रूप विकसित हुआ। ऐसी संपूर्ण शैली पहाड़ी शैली के नाम से जानी जाती है। पहाड़ी शैली के चित्रों में प्रेम का विशिष्ट चित्रण दृष्टिगत होता है। कृष्ण–राधा के प्रेम के चित्रों के माध्यम से इनमें स्त्री–पुरूष प्रेम सम्बन्धों को बड़ी बारीकी एवं सहजता से दर्शाने का प्रयास किया गया है। इस शैली की कई उपशैलियाँ हैं, जिन्होंने कालांतर में स्वतंत्र अस्तित्व ग्रहण कर लिया। इनमें प्रमुख पहाड़ी शैलियाँ हैं–बसोहली शैली, गुलेर शैली, कांगड़ा शैली, जम्मू शैली, चंबा शैली एवं गढ़वाल शैली। पहाड़ी चित्रकला शैली के अन्तर्गत प्रकृति का प्रमुखता से निरूपण किया गया है। पहाड़ी चित्रकला बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हिमाचल एवं पंजाब क्षेत्र में एक उन्नत एवं परम्परागत चित्रण परम्परागत विद्यमान थी जिसके उदाहरण क्षेत्रों में प्राप्त हुए हैं, प्रसिद्ध कला समीक्षक डॉक्टर आनंद कुमार स्वामी ने इन चित्र शैली का वर्गीकरण करते हुए, जिनमें बसोहली, कुल्लू, गुलेर, एवं नूरपुर से प्राप्त चित्रों को अंगीकृत किया गया था जिसको दक्षिणी चित्रमाला कहा गया श्री अजीत घोष ने बसोहली तथा नूरपुर के आरम्भिक चित्रों में 17वीं शताब्दी के माने हैं जै सी फ्रेंड्स ने अपने अध्ययन में कहा है कि लंबी मंडी तथा सुकेत नामक स्थान में प्रभाव हैं जो कांगड़ा शैली में अपना भिन्न स्वरूप रखते हैं।

राजासंसारचन्द्र के कांगड़ा के शासक बनने पर कांगड़ा में श्री कृष्ण भक्ति एवं चित्रकला को श्रेष्ठ सम्मान मिला जिससे आकर्षित होकर गुलेर के चित्रकार कांगड़ा की तरफ आए चित्रकारों का कांगड़ा आने के कारण एक यह भी था कि गुलेर के राजागोवर्धन सिंह की मृत्यु 1770 में हो गई थी राजागोवर्धन सिंह ने ब्लॉक को विशेष संस्करण प्रदान किया उनकी मृत्यु के पश्चात् गुलेर के कलाकार उचित परिवेश में मिलने आता कांगड़ा की प्रारम्भिक चित्र परम्परा से आकर्षित होकर कांगड़ा आ गए 18 वीं शताब्दी के अंतिम चरण में कांगड़ा राज्य भारतीय चित्रकला का महानकेंद्र बन गया।

कांगड़ा चित्रकारी का उदगम कॉँगड़ा से हुआ जो राजवाड़ेदौर की देन है। इसके फलने–फूलने का कारण बसोहली चित्रकारी का अठाहरवीं शताब्दी में फीका पड़ा जाना था हालांकि कांगड़ा चित्रों के मुख्य केंद्र गुलेर, बसोली, चंबा, नूरपुर, बिलासपुर और कांगड़ा हैं, बाद में यह शैली मंडी, सुकेट, कुल्लू, आकी, नालागढ और टिहरी गढ़वाल (मोला राम द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया) में भी पहुंच गयी, और अब इसे सामूहिक रूप से पहाड़ी चित्रकला के रूप में जाना जाता है, जो कि 17वीं और 19वीं शताब्दी के बीच राजपूत शासकों द्वारा संरक्षित शैली को दर्शाता है।

कला जगत को भारत की लघुचित्र कला एक अनुपम क्षेत्र है। जम्मू से लेकर गढ़वाल तक उत्तर–पश्चिम हिमालय पहाड़ी रियासतों की इस महान परम्परा का वचस्व 17वीं से 19वीं शताब्दी तक रहा। छोटी–छोटी रियासतों जिनमें से अधिकांश

वर्तमान हिमाचल प्रदेश में पनपी है यह चित्रकला पहाड़ी शैली के नाम से विश्वभर में विख्यात है। पहाड़ी चित्रकला के मुख्य केन्द्र थे गुलेर, कांगड़ा, चम्बा, कुल्लू–मण्डी, बसोहली।

## बसोहली शैली

पहाड़ी क्षेत्र में चित्रकला का प्रारम्भिक केन्द्र बशोली था जहां राजा कृपाल पाल के संरक्षणाधीन एक कलाकार जिसे देवीदास नाम दिया गया था, 1694 ईसवी सन् में रसमंजरी चित्रों के रू‍प में लघुचित्रकला का निष्पादन किया था। रसमंजरी लघुचित्रकलओं की एक अन्य श्रृखंला है 1730 ईसवी सन् में कलाकार मनकू द्वारा चित्रित की गई गीतगोविन्द की एक श्रृंखला का एक चरित्र उदाहरण बशोली शैली के आगे विकास को दर्शाता है। यह चित्रकला राष्ट्रीय संग्रहालय के संग्रह में उपलब्ध है और एक नदी के किनारे पर एक उपवन में कृष्ण को गोपियों के साथ चित्रित करती है।

- इस चित्रकला का केन्द्र जम्मूकश्मीर के कठुआ जिले की बशोली तहसील में है।
- इसका प्रभाव चंबा, कुल्लू, मंडी, अरकी, नुरपूऔर मानकोट रिसायत की कलाओं पर देखा गया है।
- इस शैली के विषयों में भागवत पुराण, गीत–गोविंद, रसमंजरी और वैष्णव धर्म रहे हैं।
- यहां के चित्रों में मुखाकृतियॉ एकदम मौलिक और स्थानीय लोककला से प्रेरित है।
- बशोली शैली के अंतर्गत राजा कृपाल सिंह के संरक्षण में 'देवीदास' नामक चित्रकार ने 1694 में रसमंजरी चित्रों के रूप मे लघुचित्रकला का निष्पादन किया था।
- कलाकार मनकू द्वारा चित्रित गीत–गोविंद की एक श्रृंखला बखेली शैली के आगे के विकास को दर्शाती है।

**चित्र सं0–01 देवीभद्रकाली, देवताओं द्वारा पूजनीय (बसोहली चिकत्रला शैली)**

## गुलेर शैली

पहाड़ी क्षेत्र में सृजित लघु चित्रकलाओं का सर्वोत्तम समूह भागवत की सुप्रसिद्ध श्रृंखला, गीतगोविन्द, बिहारी सतसई बारहमासा और 1760–70 ईसवी सन् चित्रित की गई रंगमाला का प्रतिनिधित्व करती है। चित्रकला की इन श्रृंखलाओं के उद्‌गम का

ठीक–ठीक स्थान ज्ञात नहीं है। इन्हें या तो गुलेर या कांगड़ा में या फिर किसी अन्य निकटवर्ती स्थान पर चित्रित किया गया होगा। भागवत और अन्य श्रृंखलाओं सहित गुलेर प्रतिकृतियों को गुलेर प्रतिकृतियों की शैली के आधार पर गुलेर शैली नाम के एक सामान्य शीर्षक के अन्तर्गत समूहबद्ध किया गया है।

- बशोली शैली के बाद चित्रकलाओं के जम्मू–समूह का उद्भव हुआ।
- इसमें मूल रूप से गुलेर से संबंध रखने वाले और जसरोटा में बस जाने वाले एक कलाकार नैनसुख द्वारा जसरोटा के राजाबलवंत सिंह की प्रतिकृतियां शामिल हैं।
- इसमें प्रयुक्त वर्ण कोमल तथा शीतल हैं।
- **यह मौहम्मद शाह के समय की मुगल चित्रकला की प्राकृतिक शैली से प्रभावित लगती है।**

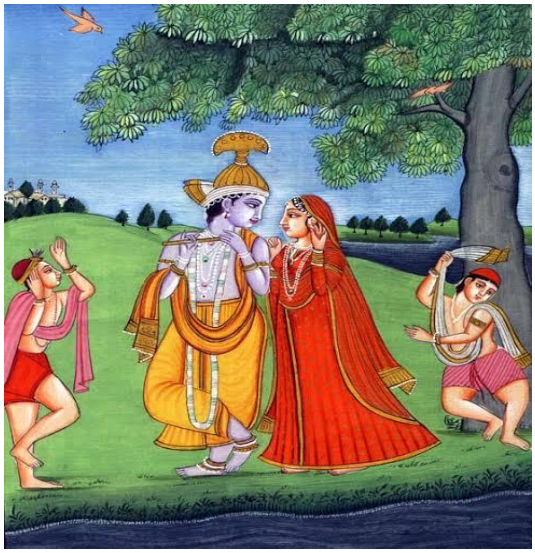

**चित्रसंख्या–02 राधा–कृष्ण गुलेररागमालाचित्रकला शैलीचित्रसंख्या–03 गुलेर के राजाबिशन सिंह का चित्र, पहाड़ी शैल**

## कांगडा शैली

गुलेर शैली के पश्चात् 'कांगड़ा शैली' नामक एक चित्रकला की एक अन्य शैली का उदम अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम चतुर्थांश में हुआ जो पहाड़ी चित्रकला के तृतीय चरण का प्रतिनिधित्व करती है। कांगड़ी शैली का विकास गुलेर शैली से हुआ। इसमें गुलेर शैली की ऑलेखन में कोमलता और प्रकृतिवाद की गुणवत्ता जैसी प्रमुख विशेषताएं निहित हैं। चित्रकला के इस समूह को कांगड़ा शैली का नाम इसलिए दिया गया क्योकि ये कांगड़ा के राजा संसारचन्द की प्रतिकृति की शैली के समान है।कुछ पहाड़ी चित्रकारों को पंजाब में महाराजा रणजीत सिंह और उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में सिख अभिजात वर्ग का संरक्षण मिला था तथा कांगड़ा शैली के आशोधित रूप में प्रतिकृतियों और एवं अन्य लघुचित्रकलाओं का निष्पदान किया था जो उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक जारी रहा।

- कांगड़ा शैली का विकास 18वीं शताब्दी के चतुर्थांश में हुआ।
- इसमें गुलेर शैली के आलेखन की कोमलता और प्रकृतिवाद की गुणवत्ता निहित है।
- कांगड़ा राजा संसारचंद की प्रतिकृति की शैली के समान होने के कारण इसे कांगड़ा शैली कहा गया।
- इस शैलीमें स्त्री चित्रों में अद्भुत सजीवता आ गई
- यह कांगड़ा, गुलेर, बशोली, चम्बा, जम्मू, नूरपुर, गढ़वाल आदि जगहों में प्रचलित रही। कांगड़ा शैली के कुछ पहाड़ी चित्रकारों को पंजाब में महाराजा रणजीत सिंह से संरक्षण मिला।
- कांगड़ा शैली की चित्रकलाओं का श्रेय मुख्य रूप से नैनसुख–परिवार को जाता है।

**चित्रसंख्या–04 राधा–कृष्ण लीलारागमालाकांगड़ाचित्रकला शैली**

## कुल्लू–मण्डी

पहाड़ी क्षेत्र मेंप्रकृतिवादी–कांगड़ा शैली के साथ–साथ, कुल्लू–मण्डी क्षेत्र में चित्रकला की एक लोक शैली ने भी उन्नति की तथा इसे मुख्य रूप से स्थानीय परम्परा से प्रेरणा मिली।इस शैली की विशेषता मजबूत एवं प्रभावशाली आलेखन और गाढे तथा हल्के रंगों का प्रयोग करना है। हालांकि कुछ मामलों में कांगडा शैली के प्रभाव को देखा जाता है, फिर भी इस शैली ने अपनी विशिष्ट शास्त्रीय विशेषता को बनाए रखता है।कुल्लू और मण्डी के शासकों की बड़ी संख्यन में प्रतिकृतियां और अन्य विषयों पर लघुचित्रकलाएं इस शैली में उपलब्ध हैं। कुल्लू चित्रकला का एक अन्य उदाहरण भी है जिसमें दो युवतियां पतंग उड़ा रही हैं। यह लघुचित्रकला अठारहवीं शताब्दी की लोक शैली में है और ठोस व मजबूत आलेखन तथा हल्की वर्ण योजना इसकी विशेषताएं हैं। पृष्ठभूमि हल्की नीले रंग की है। युवतियों ने प्ररूपी परिधान और आभूषण पहने हुए हैं जो उस अवधि में कुल्लू क्षेत्र में प्रचलित थे दो उड़ते हुए तोते आकाश को प्रतीकात्मक रूप में दर्शाते हैं। इस लघुचित्रकला का सम्बन्ध राष्ट्रीय संग्रहालय के संग्रह से हैं।

- यह कुल्लू–मण्डी क्षेत्र में चित्रकला की एक लोक–शैली है।
- इस शैली की विशेषता मजबूत एवं प्रभावशाली आलेखन और गाढ़े तथा हल्के रंगों का प्रयोग करना है।
- इसमें भागवत की श्रृंखला, गोवर्धन को अंगुली पर उठाए कृष्ण, वर्षा का स्पष्ट रेखांकन आदि का लघुचित्र 1794 में श्री भगवान ने खींचा है।
- पतंग उड़ाती दो युवतियों का लघुचित्र भी कुल्लू–मण्डी शैली में विशिष्ट है।

**चित्रसंख्या–05 पतंगउड़ातीदो युवतियांकुल्लू–मंडीपहाड़ीचित्रकला शैली**

## सन्दर्भग्रंथसूची


1. सरोजरानी"पहाड़ीचित्रकला का अनुशीलन"अल्मोड़ाबुकडिपोअल्मोड़ाउत्तराखण्ड संस्करण–2011 पृ0 सं0 – 67
2. डॉ0 रामशंकर"हिंदुस्तानीसंगीत के रंगोंमें ऋषभस्वर का महत्व"संजय प्रकाशननयीदिल्ली संस्करण–2011 पृ0सं0–57
3. किशोरीलालवैध 'कला एवंसज्जा", ओमचन्द्रहाण्डानेशनलपब्लिशिंगहाउसदिल्ली 1969 पृ0सं0 – 19,23
4. एन0 एस0 रंधावा"कॉंगड़ापेंटिंग"बिहारीसतसाईंकांगड़ापेटिंगराष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली पृ0सं0 – 23, 29
5. प्रियंकाकौशल, "संधि प्रकाशराग"संजय प्रकाशनदिल्लीसंस्करण– 2004 पृ0सं0 – 58
6. डॉ0 लक्ष्मी नारायण गर्गभरतनाट्यम भारतीय संगीतकार्यालय हाथरस द्वितीय संस्करणजून 2008 पृ0सं0 – 45
7. डॉ0 निहारिकाचतुर्वेदी, "नाट्यशास्त्र का वैदिकआधार"नागपब्लिशर्सदिल्लीसंस्करण– 2005 पृ0सं0 –38, 39
8. डॉ0 डॉ0निर्मलाजैन, "सिद्धांतऔरसौंदर्यशास्त्र" वाणी प्रकाशनईदिल्लीसंस्करण– 1999 पृ0सं0 – 38
9. हेमलताजोशी, "रागऔररस"निर्मलपब्लिकेशनदिल्लीप्रथमसंस्करण– 1999 पृ0सं0 – 28
10. डॉ0 पूरनचंद्रटण्डन, "मध्यकालीनकृष्णकाव्य सौंदर्यचेतना"संजय प्रकाशप्रथमसंस्करण– 2004 पृ0सं0 – 6,9
11. डॉ0 तनुजातिवारी, "प्रगतिशीलकवितामेंसौंदर्यचिंतन"भारतीय भाषापीठनईदिल्लीप्रथमसंस्करण– 1987 पृ0सं0 – 46
12. डॉ0 रामानंदतिवारी, "अभिनवरसमीमांसा"भारतीय पुस्तकमंदिरभरतपुरराजस्थान पत्रिका–1983 पृ0सं0–25
13. डॉ0 उमेशपाण्डेय, 'भास एवंभवभूति के नाटकोंमेंरसतत्व"विद्यानिधि प्रकाशनदिल्लीप्रथमसंस्करण– 1999 पृ0सं0–99